Vol 6 Issue 8 May 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 ISSN No.2249-894X

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 8 | MAY - 2017

REVIEW OF RESEARCH

भक्तिकाल का गद्य साहित्य

डॉ. मनोज आर. पटेल
आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी विभाग) सी.बी. पटेल आर्ट्स कालेज नडियाद , गुजरात.

प्रस्तावना :

हिन्दी का प्राचीन गद्य भाषा, शैली, विषय, सांस्कृतिक अध्ययन आदि अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। वास्तव में वह आधुनिक गद्य की भूमिका है। आधुनिक गद्य की अनेक भाषा–प्रवृत्तियों, विधाओं और शैलियों के पूर्व रूपों का दर्शन भारतेन्दु–पूर्व गद्य में होता है। आधुनिक युग के पूर्व मौलिक ललित गद्य का निर्माण कम हुआ था। विशुद्ध ललित गद्य का परिमाण तो और भी विरल है। अधिकत सानुप्रास गद्य लिखा गया है। वस्तुतः रीतिकाल तक शुद्ध साहित्यिक गद्य की प्रवृत्ति बहुत मंद रही, अललित गद्य अधिक लिखा गया। वह भी स्वतंत्रत रूप में कम है, टीका–टिप्पणी और अनुवाद के रूप में अधिक है।

हिन्दी परिवार की भाषाओं में गद्य का उन्मेष कालक्रम से सर्वप्रथम राजस्थानी में प्राप्त होती है राजस्थान में गद्य–परम्परा निश्चित रूप से ईसा की तेरहवी शताब्दी से प्रारम्भ होती है। बनारसी बोली की बारहवीं शती में निर्मित 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' (दामोदर) कृति उपलब्ध को स्पष्ट करने के लिए उनके संस्कृत रूपांतर दिये गये है। परंतु इसके पश्चात बनारसी अथवा अवधी में अठारवीं शती तक गद्य परंपरा प्राप्त न होने से बनारसी या अवधी को गद्य की दृष्टि से अग्रणी नहीं माना जा सकता। ब्रजभाषा दक्खिनी में गद्य का प्रारंभ यो तो चौदहीव शती के पूर्व माना जाता है। परन्तु प्रामाणिक रूप मे इन भाषाओं का गद्य 16 वीं शताब्दी से उपलब्ध होता है।

भक्तिकाल में अवधी के अतिरिक्त हिन्दी की शेश सभी विभाषाओं में गद्य निर्माण हुआ। गद्य रूप भी अनेक कथा, वात, वर्णन चरित्र वचनिका–ये ललित गद्य रूप में इन भाषाओं का गद्य सोलहवी शताब्दी से उपलब्ध होता है।

भक्तिकाल में अवधी के अतिरिक्त हिन्दी के शेश सभी विभाषाओं में गद्य निर्माण हुआ है। गद्य रूप भी अनेक विकसित हुए है। भक्तिकाल के गद्य में प्रतिपादित प्रमुख विषय है। धर्म, दर्शन, अध्यात्म, चिकित्सा, ज्योतिश, भूगोल, शकुन–शास्त्र, व्याकरण, गणित, टीका टिप्पणियों और अनुनिद रचनाओं को भी संख्या काफी बड़ी है। धार्मिक व दार्शनिक ग्रन्थों, काव्यग्रंथों और व्याकरण, कोकशास्त्र, ज्योतिष आदि उपयोगी विषयों की टिकाओं और टिप्पणियों के अतिरिक्त संस्कृत प्राकृत, और फारसी, अरबी के ग्रन्थों के अनुवाद भी राजस्थानी, ब्रजभाषा और दक्खिनी में हुए।

ब्रजभाषा गद्य– प्राचीन ब्रजभाषा गद्य प्राचीन खड़ी बोली गद्य की अपेक्षा अधिक विकसित और वैविध्यपूर्ण है। धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों के साथ वैधक, ज्योतिश, इतिहास, भूगोल प्रश्न शकुन सामुद्रिक गणित, धनुर्वेद आदि विषयों का भी प्रतिपादन ब्रजभाषा गद्य में हुआ है। ब्रजभाषा–गद्य साहित्य स्थूलतः चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। मौखिक, टीकात्मक अनुदित और पद्यप्रधान रचनाओं में यत्र–तत्र, प्रयुक्त टिप्पणीपरक गद्य। मौलिक गद्य वल्लभसंप्रदाय के वचनामृतों वार्त्ताग्रन्थों इस संप्रदाय के अन्य ग्रन्थों अन्य धार्मिक सम्प्रदायों की सैद्धान्तिक रचनाओं, कथा पुस्तकों दर्शनविशयक ग्रन्थो, वैद्यक, ज्योतिष आदि उपयोगी विषयों को रचनाओं और पत्रो, शिलालेखो तथा कागज पत्रो के रूप में उपलब्ध होता है। टीका, टिप्पणी, तिलक और भावना शीर्षक से व्याख्यात्मक गद्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार अनुवाद अथवा छायानुवाद रूप में लिखित ग्रन्थ भी प्राप्त है। पद्य ग्रन्थों में टिप्पणीपरक गद्य चर्चा, वात, वार्ता तिलक या वचनिका शीर्षक से लिखा गया। ब्रजभाषा गद्य के प्रमुख रूप है। कथा प्रबंध (धार्मिक–सैद्धान्तिक–निरूपण) गोसत (गोश्ठी–धार्मिक दार्शनिक संवाद), वचनिका, प्रश्नोत्तर वर्णन, वचनामृत (प्रवचन), पत्र वार्ता तथा जीवनी इनमें से प्रथम आठ भक्तिकाल में ही निर्मित हुए है। मौलिक, टीकात्मक अनुदित, टिप्पणीपरक चारो प्रकार का गद्य भक्तिकाल में लिखा गया। जहाँ तक विशयों का प्रश्न है भक्तिकला में धर्म दर्शन और आत्कवशियक ग्रन्थों के अतिरिक्त ज्योतिष और चिकित्साविषयक पुस्तके भी लिखी गयी। ब्रजभाषा गद्य परंपरा में सर्वपमि गारेखपंथी ग्रंथों का उल्लेख किया जाता है। परन्तु गोरखपंथ से संबद्ध, गोरखसर' 'शिष्टपुराण' गोरक्षोपनिशद्। महादेवगोरसगुष्टि आदि

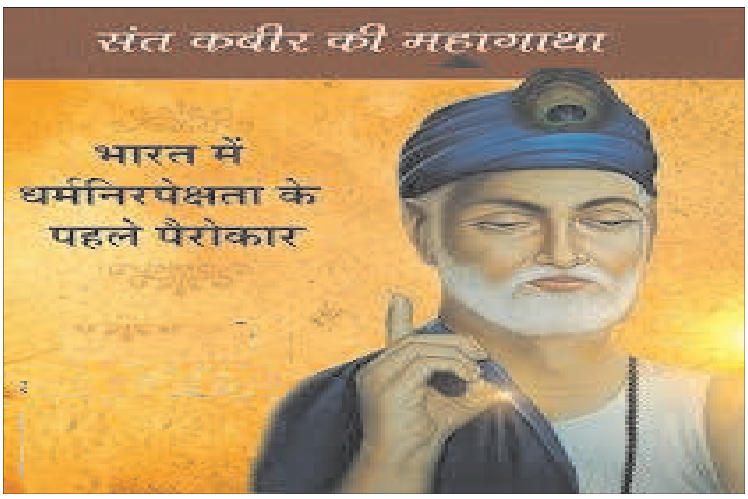

ग्रन्थ जिस रूप में प्राप्त है। गोरखनाथ चरित अथवा तेरहवी–चौदहवी शती के नही है। बल्कि काफी परवर्ती है। इन गोरखपंथी रचनाओं की सत्रहवीं शती से पूर्व की प्रतिया प्राप्त नही हे। प्राप्त प्रतियों की भाषा में प्राचीन शब्द रूपों के साथ परवर्ती मध्यकालीन भाषा प्रवृत्तिया प्राप्त नही है। प्राप्त प्रतियों की भाषा प्रवृतियाँ (आर्वाचीन रूप और प्रयोग) पर्याप्त है। अतः इन्हें गोरखकृत अथवा तेरहवी, चौदहवीं शताब्दी का मानना कठिन है। गोरखनाथ के नाम से प्रसिद्ध रचनाओं में कुछ उनके संस्कृत–ग्रन्थों के अनुवाद और कुछ उनके अनुयायियों द्वारा उकने सिद्धांतों के अनुसार निर्मित प्राप्त होती है।

आचार्य वल्लभ और गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी के नाम से भी हिन्दी में ऐसी अनेक गद्य रचनाएँ प्रसिद्ध है जो या तो उनकी संस्कृत पुस्तको के अनुवाद है या उनके संस्कृत–ग्रंथो की संस्कृत–टीकाओं के हिन्दी रूपांतर। वल्लभाचार्य के नाम से प्रसिद्ध 'चौरासी अपराध' (मार्ग–सिद्धान्त) उनके किसी अनुयायी की रचना है। और विट्ठलनाथ जी के नाम से उल्लिखित। शृंगार रस–मंडन उनकी संस्कृत पुस्तक का अठारहवी शती में किया गया ब्रजभाषा रूपांतर है। विट्ठलाथ जी ने ब्रजभाषा ग्रंथ में किसी ग्रन्थ का निर्माण नही किया था 'यमुनाष्टक' और नवरत्न सटीक भी बहुत परवर्ती रचनाए है (अठारवहीं शताब्दी की) अष्टछाप के कवि नन्ददास के नाम से प्रसिद्ध 'नासकेतो पुराण भाषा अठारवहीं शताब्दी के स्वामी नन्दास की रचना है। और चतुर्भुजदास–कृत बतायी जाने वाली शटऋतु वार्ता' हरिराय रचित है। गो. गोगुलनाथ जी के नाम से प्रसिद्ध 'वनयात्रा' शीर्षक रचना भी उनकी कथित है, लिखित नही।

इस समय की प्रमुख ब्रजभाषा गद्य रचनाएं है ध्रुवदास कृत सिद्धान्त विचार, नाभादास कृत अष्टयाम, श्री विट्ठलनाथ और श्री गोकुलनाथ के शिष्यों द्वारा लिखित वचनामृत, किसी अज्ञातनाम रचनाकार की सिंगार सुतुक(पौराणिक कथात्मक रचना)'शालिघेत,नकुल पांडव के नाम से प्रसिद्ध संस्कृत–ग्रंथ के आधार पर राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा में लिखित।

रीतिकाल से पूर्व खड़ी बोली गद्य रचनओं को (उत्तर की खड़ी बोली की और दक्खिनी की रचनाओं को) और साहित्यिक (आललित) के भेद से दो वर्गो मे विभक्त किया जा सकता है। ललित गद्य वार्ता शीर्षक से कथा–कहानी के रूप में और अन्येक्ति–कथा के रूप में प्राप्त होता है। अलिखित गद्य धर्म, दर्शन पौराणिक, भूगोल और शकुन– इन विषयों पर उपलब्ध होता है। अमौलिक (व्याख्यात्मक अनुदित) गद्य के रूप है। टीका, टिप्पण तर्जुमा तफसीर सानुप्रास और अनुप्रासरहित की दृष्टि से भी प्राचीन खड़ीबोली–गद्य को वर्गीकृत किया जा सकता है। मध्य काल में तुकमय गद्य की प्रवृत्ति राजस्थानी, मैथिली, दम्दिनी उर्दू खड़ी बोली, आदि प्रायः सभी भाषाओं में रही है। गद्य पद्य के परिवेश की दृष्टि से खड़ीबोली और दाखिनी की प्राचीन गद्य रचनाएॅ स्थूलतः त्रिविध है–पूर्णतः गद्य रचनाएॅ, गद्य पद्यमय–रचनाएॅ यत्रवत्र पधौकरण वाली गद्य प्रधान रचनाएँ भक्तिकाल के गद्य साहित्य में खड़ी बोली, अवधी भाषा, दक्खिनी गद्य तथा राजस्थानी गद्य में रचनाए की गयी है। इन रचनाओं का उद्देश्य ही भक्तिपरक रचनाओं से समाज को जोड़ना था।

संक्षेप में भक्तिकाल में साहित्यिक गद्य बहुत कम परिमाण में रचा गया। इस समय की ललित गद्य रचनाओं की संख्या बीस से अधिक नहीं है। भक्तिकाल के सामान्य गद्य का परिमाण विशाल नहीं है। बौद्धिक व्यावहारिक जीवन के अपेक्षाकृत कम विकसित होने, तत्कालीन जनमानस के आज की अपेक्षा अधिक भावुक, काव्यप्रिय और धर्मनिष्ठ होने, भक्ति आन्दोलन की तीव्रता संस्कृत और अपभ्रंश की पद्य प्रश्रय–प्रवृत्ति, प्रेम के अभाव, कागज की कमी, साहित्य को कंठस्थ करने की परम्परा और राजस्थानेतर विभाषाओं में व्याख्यानुवाद की प्रवृत्ति प्रबल न होने के कारण गद्य का विकास भक्तिकाल में न हो सका। गद्यात्मकता की दृष्टि से भक्तिकाल का गद्य स्थूलतः विविध है। तुकमय, पद्याभास गद्य और तुकरहित शुद्ध गद्य तुकमय गद्य की प्रवृत्ति राजस्थानी, दक्खिनी, खड़ी बोली आदि प्रायः सभी विभाषाओं में रही है। गद्य के साथ–साथ और पद्य के बीच गद्य रखने की परिपाटी भी प्रचलित थी।

डॉ. मनोज आर. पटेल
आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी विभाग) सी.बी. पटेल आर्ट्स कालेज नडियाद , गुजरात.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com